ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-5* August-2020
Anthology : The Research

श्रुतियों (धर्म ग्रन्थों) को पवित्र क्यों माने?

Why Should Shruti (Dharm Granth) Be Considered Holy.

Paper Submission: 15/08/2020, Date of Acceptance: 25/08/2020, Date of Publication: 26/08/2020

नसीम फातिमा
पूर्व प्रवक्ता,
दर्शन शास्त्र विभाग,
हनमंतु महाविद्यालय लाहुरपुर,
हनमानु गंज, इलाहाबाद, उतर प्रदेश, भारत

सारांश

संसार के जितने भी ग्रन्थ है वे सर्वप्रथम यहीं संदेश देते हैं कि पहले अपने मन को शुद्ध करो, बुद्धि को एकाग्र चित्त करके तथा शांत भाव होकर प्रत्येक श्रुति का अध्ययन करो और फिर इसका अर्थ समझो, तथा कर्म में लाओ। श्रुतियॉ ईश्वरीय आदेश हैं, जो हमे वेद गीता, कलाम–पाक, बाइबिल, तौरेत द्वारा प्राप्त हुयी। जितनी भी श्रुतियॉ है वह हमे लाभ देती है तथा रक्षा रती हैं। इन सभी का एक ही उददेश्य मानव कल्याण है प्रत्येक धर्म का लक्ष्य एक ही है मात्र स्थान और भाषा का अंतर है। सत्य तथा न्याय को स्थापित करने के लिये भद्र पुरूषो का जन्म हुआ जिन्होने धर्म का वास्तविक अर्थ अपने कर्मो में लाकर उसे पूरा करने को बताया जिससे सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड की रक्षा हो तथा सभी का उद्धार, प्रेम तथा सत्य का संचार हो कर सभी का कल्याण हो।

All the texts of the world first give this message here that first purify your mind, study each sruti by concentrating the mind and keeping calm and then understand its meaning, and bring it into action. Shruti is the divine order, which we received by Ved Gita, Kalam-Pak, Bible, Touret. Whatever Sruti is, it benefits us and protects us. All these have the same objective of human welfare, the goal of every religion is the same, only the difference of place and language. In order to establish truth and justice, gentle men were born, who brought the real meaning of religion in their deeds and told them to complete it, so that the entire universe is protected and everyone's salvation, love and truth are communicated and welfare of all.

मुख्य शब्द : श्रुति, वेद, पैगंबर, कुरान, पाक, तौरेते, इंजील ।
Shruti Ved Prophet, Quran Pakay Tourettee Gospel.

प्रस्तावना

संसार के जितने भी धार्मिक ग्रन्थ है वे सभी सर्वप्रथम यही संदेश देते है कि पहले अपने मन को शुद्ध करो, बुद्धि को एकाग्र चित्त करके तथा शान्त भाव होकर प्रत्येक अर्थ समझो। अर्थ समझ कर फिर इसको अपने कर्म में लाओं तब लाभ प्राप्त करो क्योंकि परमात्मा की बाणी कभी असत्य नहीं होती है। असत्य होती है मनुष्य की वाणी, परत्मामा ने श्रुतियों के माध्यम से कह दिया है कि करो और पाओं, लेकिन करने की शर्त पूरी कर लो। किसी भी मंत्र को जपने से या रटते रहने से कोई लाभ नहीं प्राप्त होगा जब तक कि उसके अर्थ को समझ कर कर्म में न लाओगें तब तक कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा। तभी लोगों ने गायत्री मंत्र को छोड दिया। विषय वासनाओं में फंस गये, और अभी भी अन्धकार में रह रहे है।

जितनी भी श्रुतियां है वे सब लाभ देती है और सब की रक्षा करती है। यह सभी श्रुतियां है तो मनुष्य के लिये ही कि वह कर्म करे और पाये। परमात्मा को क्या पाना वह तो निस्काम है। परत्मामा तो स्वयं कहता है कि हे मानव जैसे कर्म करोगें उसका फल मैं तुम्हें अवश्य दूंगा। वह कर्म तुम्हारा व्यर्थ नहीं होगा चाहे शुभ कर्म करो या अशुभ इनके अलग–अलग फल मैं तुमको दूंगा।

अध्ययन का उद्देश्य

जैसा कि इस लेख से स्पष्ट है कि हमारा उद्देश्य मानव कल्याण है जिसको हमने पवित्र श्रुतियों के माध्यम से पूरा करने का प्रयास किया है। इसके लिये सबको पहले हमें अपनी मानसिकता को, अपने मन को शुद्ध करना होगा तभी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगें क्योंकि दूषित मानसिकता अपवित्र मन

से कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होते। हमें वस्तुस्थिति को समझना होगा धर्म के नाम पर जो आवरण ओढ़े है या जो आडंम्बर हो रहा है उसकी वास्तविकता को देखना होगा कि क्या यह वास्तविक धार्मिक है जो हमें धर्म के नाम पर झूठे प्रचार से कभी जेहाद के नाम से कभी तलवार के नाम से हमे पथभ्रस्ट कर रहे है, ताकि हम उनके कुकर्मो को देख न सके और इसी अन्धेरे में भटकते रहे जिससे उनके हर प्रकार के अवैध कार्य, योजनायें पूरी होते रहे।

वेद

जो भी श्रुति परक वाक्य हैं हम उनका अभ्यास करते करते छोड देते है क्योंकि या तो हम उन वाक्यों के अर्थ को ठीक ढंग से समझ नहीं पा रहे है या हमारे करने का ढंग ठीक नहीं, इसलिये यह श्रुति परक वाक्य सृष्टि के आदि से पवित्र थे और अंत तक पवित्र रहेगे। इसलिये वेदो को तथा कुरान–पाक दोनो को श्रुति कहा जाता है और यह दोनो अपौरूषेय हैं। यह दोनो ही एक बात कहते है मात्र भाषा, समय तथा स्थान का अन्तर है। वेदो तथा कलाम पाक में जो ईश्वर के लिये कहा गया है कि ईश्वर का वाहय स्वरूप है।

ओम यस्य भूमि प्रभान्तरिक्षमुतोदरम
दिव यश्चक्रे मूर्धानं तस्मेज्येष्ठाय
ब्राहमणे नमः।।

यह भूमि जिसके चरणों जैसी अन्रक्षि उदर जैसा भुलोक को जिसने अपनी मुर्धा बनाया उस श्रेष्ठ ब्रहम को नमस्कार।

ओउम यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः
अग्नि यशचक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रहमणे नमः।।

अर्थात –सूर्य और चन्द्र दोनो फिर से नये हुए जिसकी आंखे है अग्नि जिसने मुख बनाया उस ज्येष्ठ ब्रहम को नमस्कार।

कुराने–पाक में कहा गया है कि –

अल्हो नूरोस्समावात व माफिल अर्द

अर्थात अल्लाह प्रकाश है जमीन और असमानो का।

इसका तात्पर्य यह है कि वह प्रकाश श्रोत पुन्ज है जो सब प्रकार के अंधकार जैसे –अज्ञान, अन्याय इत्यादि को समाप्त करके प्रकाशमय न्याय स्थापित करता है।

वेद

वेदो में कहा गया है कि वह चेतनाओं का संगठित रूप है।

इस जगत में जो कुछ चेष्ठ करता है, उड़ता है (गिरता) है ठहरता है प्राण लेता है या नहीं लेता और जो कुछ आंखे झपकता हुआ विद्यमान हो रहा है। ब्रम्ह के सब विश्वरूप ने पृथ्वी को धारण किया हुआ है उस विश्वरूप की सम्मिलित शक्ति एकाकार होकर स्थित है , उसी को ब्रम्ह कहते है।

वेदो में कहा है यही एक सर्वव्यापक है और हृदय में विराजमान है इस परमात्मा में यह सब विविध शक्ति रूप देवता और चलने वाले पृथ्वी आदि लोक वर्तमान रहते है।

आज आसमानी या अपौरूष हिदायतनामों के नाम से संसार में जो ग्रन्थ उपलब्ध है उनमें से एक अति महत्वपूर्ण 'कुराने–पाक' भी है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह सबसे बाद की किताब है और सबसे अन्तिम (ईश्वरीय संदेश) इस्लामी दर्शनिको ने कुराने पाक को ईश्वरीय पवित्र पुस्तक होने के लिये दर्शानिक एवं तार्किक प्रमाण दिये है। सबसे पहले तो कुरान–पाक स्वयं अपने कलाम ईलाही या ईश्वरीय संदेश होने का तार्किक प्रमाण इन शब्दों में प्रस्तुत करता है।

सबूत

1. इसमें कोई संदेह नहीं कि कुराने–पाक संसार के पालनहार (अल्लाह) का उतारा हुआ, इसे हजरत जिबरईल अलै0 सलाम (फरिश्ता) के माध्यम से पैगम्बर (इस्लाम) हजरत मोहम्मद सल्ल0 अलैह वसल्लम पर उतरा है। ताकि तुम लोगों (मनुष्यों) को ईश्वर के दण्ड से सूचित कर दो।

कुराने पाक स्वयं अपने आप में साक्ष्य (सबूत) है कि मैं अल्हा की किताब हूँ यह कथन वह आधार ह जो कुराने पाक के बारे में किताबे ईलाही (अल्हा की किताब) होने के दावे को नियमित और ध्यान योग्य बनाता है और इसी आधार पर यह दावा विचार करने योग्य बन जाता है, जिसके दो महत्वपूर्ण और सैद्धान्तिक कारण हैं।

क– अल्हा की ओर से आने वाली किताब कोई साधारण पुस्तक नहीं अपितु वास्तव में वह (श्रुति) है जो सृष्टि के शासक की ओर से लागू होने वाला आदेश होता है जिसे हमें प्रत्येक स्थित में मानना ही है।

ख. मैं अल्लाह का उतारा हुआ हूँ बड़ी अहमियत रखता है– यह स्वयं अपना प्रमाण साबित करता है।

2. कुराने पाक और इसको लाने वाले पैगम्बर के आने का उल्लेख पिछली आसमानी किताओं (तौरेत, इन्जील) में शुभ सूचना के रूप में पहले से ही आ चुका था और उन्हीं गुणों एवं निशानियों के साथ संसार में प्रकट हुआ। शुभ सूचना शब्द बार–बार आया है। यह कुराने पाक कोई गढ़ी हुयी बाणी नहीं बल्कि अल्हा की वाणी है जो पिछली आसमानी किताबे (श्रुतियों) की भविष्यवाणी है।

(सूरहा युसुफ–111)

जो इस उम्मी (अनपढ़) रसूल और नबी की पैरवी अपनाये इसका उल्लेख तौरेत और इन्जील में लिखा पाया है।

(सूरहा आराफ–157)

खुदा बन्द सीना से आया और शईर से उन पर जाहिर हुआ, उसने फारान पर्वत से दर्शन दिये, उसके दाहिने हाथ में आतिशी शरीयत थी।

(इसतस्ना अध्याय–22)

मैं उनके लिये उन्ही के भाईयों मे से तेरी–तरह एक नबी उतारूंगा और अपना कलाम उनके मुँह में डालूंगा, जो कोई मेरी इन बातों को, जिनको वह मेरा नाम लेकर कहेंगा, न सुनेगा तो मैं उनका हिसाब उससे लूंगा।

(इस्तस्ना अध्याय–18–आयात 18–19)

हज़रत ईसा अलैह–सलाम स्वयं कहते है,– अगर तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मेरे आदेशों का पालन करोगे और मैं ईश्वर से निवेदन करूंगा वे तुम्हें दूसरा सहायक देगा ताकि वह आखिरी (अंत) तक तुम्हारे साथ रहे।

बाइबिल (यूहन्ना अध्याय–14 आयात 16–17)

3. कुराने–पाक के अन्दर कोई टकराव या विरोधाभास नहीं है, उसका यह गुण उसके सत्य होने की खुली दलील है– जैसा खुद उसने फरमाया,

अगर यह कुराने–पाक अल्लाह के बजाय किसी और की ओर से होता तो वे इसके भीतर बड़ा विरोधाभास पाते।

(सूराः निसा)

4. आज के युग में वैज्ञानिक जो नई–नई खोजे कर रहे हैं उसके विषय में कुरान–पाक पहले ही बता चुका है जो आज 1500 वर्ष बाद सत्य साबित हो रही है। जैसे–

यह सृष्टि पहले एक प्रकार का धुआ (गैस) थी, जिसमें अनेक प्रकार के ग्रहो ने जन्म लिया।

(सूरह–अम्बिया–30)

सब प्राणियों का मूल पानी है, जिससे हर प्राणी की रचना हुयी।

चांद और सूरज एक निश्चित दूरी पर धूम रहे है इत्यादि।

5. अल्लाह ने कुरान–पाक में एक स्पष्ट चुनौती दी है कि यदि इस किताब में तुम्हें किंचित मात्र का भी संदेह हो तो, पूरा संसार मिल कर इसी के अनुरूप (ज्ञान, विज्ञान, व्याकरण, साहित्य की बारीकिया) तुम दूसरी किताब बना लाओं।

परन्तु आज के दिन तक यह (1500 वर्ष) तक असम्भव ही रहा। इस किताब के माध्यम से पैंगम्बर इस्लाम सल्ल0 ने अरब की जिहालत (अज्ञानता) को समाप्त किया और उन्हें अपने सच्चे और व्यवहारिक जीवन की कला से भी अवगत कराया।

उन्होने कुराने–पाक क्या कहना चाहता है क्या करने का आदेश वह (अल्लाह) दे रहा है यह स्वयं उन्होने करके वास्तविक जीवन में दिखाया।

पूरा अरब जो कटटर और जाहिल था उनको इन्होने अपने निर्मल आचारण, प्रेम, आत्मीयता, न्याय, पवित्रता, सद्भाव, सत्य से सत्यमार्ग दिखाया व उनका हदय परिवर्तन किया ।

इसको देखकर (आचरण) को उनके घोर–शत्रु भी उनको आदर के भाव से देखने लगे, तथा उनको सादिक और 'अमीन' (सच्चा, रक्षक) की उपाधि दी।

अतः उन्होने पूरे अरब में व्यवहारिक रूप प्रेम, सदभाव से इस्लाम धर्म का प्रचार, प्रसार किया।

इस्लाम धर्म तलवार से स्थापित नहीं हुआ बल्कि अपने सच्चे, पवित्र आचरण, न्याय, प्रेम, भाईचारे से स्थापित हुआ है। इस्लाम धर्म के प्रर्वतक हजरत मोहम्मद सल्ल0 अलैह वसल्लम ने अपने व्यवहारिक आचरण से करके दिखाया।

जहां पर प्रश्न यह है कि इस्लाम जेहाद या तलवार से फैला है तो यह बताना अत्यन्त आवश्यक है कि कुरान में हिंसा नाम का कोई स्थान ही नहीं है।

जहां पर यह शब्द जेहाद का प्रयोग हुआ है, तो वह उन लोगों के लिये प्रयुक्त हुआ जिसको बहुत ज्ञान होने पर भी या जो अज्ञानी थे उनको समझाने के सारे प्रयास विफल होने के पश्चात ही इनकी आसुरी प्रवृत्ति को समाप्त करने के लिये जेहाद का आदेश हुआ।

इन लोगों से आसुरी प्रवृत्ति जाग्रत हो गयी थी इसको समाप्त करने के लिये तथा सत्य और न्याय को स्थापित करने के लिये यह समय और परिस्थित के अनुसार आवश्यक था।

यदि यह धर्म विरूद्ध होता या अन्याय पूर्व कृत्य होता तो श्रीराम रावण का वध कदापि न करते।

उन्होने भी (श्री राम) सत्य, न्याय की रक्षा की और यहां इस्लाम धर्म में असुरी प्रवृत्ति से रक्षा करने का हुक्म है या श्री कृष्ण कौरव से युद्ध न होने देते।

अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि सारे धर्मो का सार, सारे धर्मो का लक्ष्य सदा से एक ही था और अन्त तक एक ही रहा।

क्योंकि कोई भी धर्म भिन्न भिन्न नहीं अपितु एक ही है, सबका उद्देश्य एक ह, सभी को सत्य पर चलते हुये निस्काम कर्म करते रहने का आदेश है जिससे परम तत्व की प्राप्ति हो।

श्रीराम, श्री कृष्ण, हजरत मोहम्मद सल्ल0 का एक ही लक्ष्य था सत्य को न्यायपूर्वक स्थापित करना।

मैने उपरोक्त विवेचना अधिकतर संसार के प्रथम अपौरूष ग्रन्थ वेदो और उपनिषद के आधार पर की है तथा उनको सिद्ध करने का प्रयास किया है साथ ही न्याय पर आधारित अपौरूष ग्रन्थ (कलाम–पाक) का उददेश्य पवित्रता, सत्यता का भी आकलन किया है।

निष्कर्ष

संसार में जितनी भी श्रुतियां है उसमें सर्वप्रथम मन को शुद्ध करने को कहा है वुद्धि को एकाग्रचित्त तथा शान्त भाव हो कर प्रत्येक श्रुति का अध्ययन करके इसके अर्थ को अपने व्यवहारिक जीवन में कर्मो द्वारा पूरा करें। क्योंकि जितनी भी श्रुतियॉ है वह हमारे लाभ के लिये है मात्र उनको रटते रहने से कोई लाभ नहीं मिलेगा अपितु ''करो और पाओ'' की शर्त को पूरा करना होगा। इसलिये ईश्वर को– 'कलाम–पाक में– ''जमीनों और आसमानो का प्रकाश'' व वेदो में–'चेतना का संगठित रूप' कहा गया है। हमें अपनी चेतना को जाग्रत करना होगा तभी हम सत्य तक पहुंच पायेगें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *घो धने जंगल में पेज–238*
2. *अथर्व वेद– 10/7*
3. *अथर्व वेद– 32/33*
4. *कलाम पाक– सूरह यासीन शरीफ पारा– 22–23*
5. *अथर्व वेद– 10/8/11*
6. *अथर्व वेद– 13/4/12, 13*
7. *सूरह फातेहा– 17*
8. *इस्लाम क्या है? मौलाना मंजूर*
9. *दर्शन, मानव और समाज–डा0 राम नाथ शर्मा*
10. *गीता रहस्य– बाल गंगाधर तिलक,*